B.A. Hons Philosophy
I paper

वैशेषिक दर्शन - द्रव्य एवं उसके प्रकार

वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक आचार्य महर्षि कणाद हैं। इन किंवदंती के अनुसार महर्षि [illegible] में [illegible] रहते थे कि उन्हें रहने की सुविधा नहीं रहती थी। जब वे खेत में होते थे एवं खेतों में अन्न के कणों को चुन कर खाते थे और इस कारण उनका कणाद का उपनाम पड़ा। वैशेषिक दर्शन को औलूक्य दर्शन के भी नाम से जाना जाता है।

वैशेषिक दर्शन में द्रव्यों का विशेष उल्लेख किया गया है। द्रव्य वैशेषिक दर्शन का एक महत्वपूर्ण पदार्थ है। द्रव्य की परिभाषा में कहा गया है कि "क्रिया गुणवत् समवायि कारणम् द्रव्यम्" अर्थात जिसमें क्रिया और गुण हो और समवायी कारण हो उसे द्रव्य कहते हैं। द्रव्य गुण और कर्म का अधिष्ठान है और अन्य कारणों का उपादान है। द्रव्य और गुण कर्म का आधार है। द्रव्य के [illegible] अभाव में गुण और कर्म की कल्पना असम्भव है। गुण और कर्म द्रव्य में ही समवेत होते हैं। इनका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता। [illegible]

द्रव्यों की संख्या नौ बताई गई है। वे हैं - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, दिक्, काल, आत्मा एवं मन। इनमें से प्रथम पाँच पंचभूत कहलाते हैं। प्रत्येक का अपना विशेष गुण होता है।

(1) पृथ्वी - रूप, रस, गन्ध एवं स्पर्श गुण युक्त पदार्थ पृथ्वी कहलाता है। पृथ्वी शाश्वत और अशाश्वत है। पृथ्वी के परमाणु शाश्वत है लेकिन इसे बने पदार्थ अनित्य है। पृथ्वी का विशेष गुण गन्ध है।

(2) जल - रूप, रस, स्पर्श, द्रवत्व से युक्त पदार्थ जल द्रव है। जल के दो प्रकार है - नित्य और अनित्य। जल के परमाणु नित्य है, लेकिन उनसे बने पदार्थ अनित्य है। जल का विशेष गुण रस है।

(3) अग्नि - रूप और स्पर्श ये दोनों गुण जिसमें विद्यमान है उसे अग्नि कहते है। अग्नि नित्य और अनित्य होता है। अग्नि का विशेष गुण रूप है।

(4) वायु - जिसमें सिर्फ स्पर्श गुण मौजूद है उसे वायु कहते है क्योंकि वायु का कोई रूप नहीं होता है और इसका प्रत्यक्ष करना संभव नहीं है। स्पर्श के आधार पर ही वायु को जाना जा सकता है। स्पर्श वायु का विशेष गुण है।

चार भौतिक द्रव्यों के व्याख्या होने के बाद आकाश द्रव्य आता है।

(5) आकाश परमाणु से रहित है। आकाश का प्रत्यक्ष नहीं होता है बल्कि उसके गुण शब्द पर अनुमान किया जाता है। आकाश विभु व नित्य होने के कारण शब्द उत्पादन में निमित्त बने है।

(5) वैशेषिक दर्शन में भौतिक द्रव्य का अस्तित्व दिक् और काल में होता है इनके अभाव में भौतिक द्रव्यों की व्याख्या असम्भव

भिन्न है इस प्रकार आकाश एक होता है पर एक ही दिक्

(6) उपाधियों के कारण अनेक भासती है दिक् ही पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण आदि दिशाओं से भिन्न एक काल होते हुए भी निरवयव का ज्ञान प्रत्यक्ष रूप नहीं होता बल्कि अनुमान का विषय है

(8) मन - वैशेषिक ने मन को अन्तरिन्द्रिय कहा है मन को आत्मा से संयोग होता है मन अणु रूप होने के कारण प्रत्यक्ष का विषय नहीं है बल्कि इसे अनुमान के द्वारा जाना जा सकता है वैशेषिक ने मन को अणु रूप में माना है मन निरवयव है, मन सक्रिय है, नित्य है, अनुमेय होता है।

(9) आत्मा - वैशेषिक दर्शन के अनुसार आत्मा उस द्रव्य को कहा जाता है जो ज्ञान का आधार है इस लिए आत्मा को ज्ञान का अधिकरण माना जाता है वैशेषिक में आत्मा के दो प्रकार माने जाते हैं (1) जीवात्मा (2) परमात्मा। जीवात्मा की संख्या अनेक है प्रत्येक शरीर में निवास करने वाली जीवात्मा नित्य एवं विभु है परमात्मा एक है अनादि एवं अनन्त है आत्मा अमर है आत्मा के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए अनेक युक्तियों का सहारा लिया गया है

वैशेषिक के द्रव्य विचार को जान लेने के बाद हम कह सकते हैं कि वैशेषिक के द्रव्यों का वर्गीकरण भौतिकवादी नहीं है क्योंकि भौतिक द्रव्यों के अतिरिक्त आत्मा की सत्ता में विश्वास करता है